दोहा-निज लोकहि बिरंचि गये, देवन इहहि सिखाय ॥
❀ वानर तनु धरि धरणि महँ, हरिपद सेवहु जाय ॥ २१० ॥

ब्रह्माजी देवताओंको शिक्षा दे अपने लोकको चले गये कि तुम सब वानरका शरीर धारण कर पृथ्वीमें भगवान्‌की सेवा करो ॥ २१० ॥

गये देव सब निज निज धामा ❀ भूमि सहित मनमहँ बिश्रामा ॥१॥
जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा ❀ हर्षे देव बिलम्ब न कीन्हा ॥२॥

सब देवता अपने-अपने स्थानको चले गये पृथ्वी सहित मनमें विश्राम पाया ॥ १ ॥ जो कुछ ब्रह्माजीने आज्ञा दी देवता प्रसन्न हो करनेको उद्यत हुए देर नहीं की ॥ २ ॥

बनचर देह धरी क्षितिमाहीं ❀ अतुलितबल प्रताप तिनपाहीं ॥३॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा ❀ हरि मारग चितवहिं रणधीरा ॥४॥

---

१ संपूर्ण देवता, तो ब्रह्मलोकको गये और अब लिखा कि-"निजलोकहि बिरंचि गये" उत्तर--ब्रह्माजीके दो लोक हैं, एक निज लोक दूसरा सुमेरु पर्वत पर सभास्थान, सो देवता सभास्थानमें गये थे, वहां से ब्रह्माजी अपने लोकको गये। अथवा ब्रह्माजीने देवताओं से कहा कि तुम वानरका शरीर धारण करो और "निज लोकहि" अर्थात् अपनेको कहा कि मैं भी अवतार लूंगा सो जांबवानका अवतार ब्रह्माजीके अंशसे हुआ।

पृथ्वीमें वनचरका देह धारण किया, जिनमें बड़ा बल और प्रताप है ॥ ३ ॥ सब वीरोंके पर्वत, वृक्ष, नख यही सब आयुध हैं, परमात्माका मार्ग जोहने लगे कि कब अवतार लें और वे वनचर सब रणधीर हैं ॥ ४ ॥

गिरि कानन जहँ तहँ भरिपूरी ❋ रहे निज निज अनीक रुचिरूरी ॥५॥
यह सब चरित सुना विबुधारी ❋ जनमत ही हत करन विचारी ॥६॥

पहाड़, वन, जहां-तहां अपनी-अपनी सुन्दर सेना बनाकर रहने लगे और यह स्थान बन्द-रोंसे पूर्ण हो गये॥५॥यह समाचार रावणने सुना और विचारा कि जन्म लेते ही मार दूँगा॥६॥

अथ क्षेपक

बसत सकल मम वश रघुवंशी ❋ ते किमि सकहिं मोहि विध्वंशी॥७॥
तदपि सजग रहिये का हानी ❋ दिये असुर करि कछु तहँ थानी॥८॥

सब सूर्यवंशी तो मेरे वशमें रहते हैं; वे मुझको क्या मार सकेंगे ? ॥ ७ ॥ तो भी सजग रहनेमें क्या हानि है ? राक्षस वहां नियत कर दिये, थाना बना दिया ॥ ८ ॥

दोहा—उत्पति और मरण जब, जाकर जिहि विधि होय ॥
कर समेत वृत्तांत सो, पहुँचावै सब मोय ॥ २११ ॥

जब जिसका जिस प्रकार उत्पत्ति व मरण हो वह वृत्तांत हमको पहुँचावे और कर पहुँचावे॥२११॥

भये दिलीप भूप जब आई ❋ जानि असुर फिरि दिये उठाई ॥१॥
सुनि रावण बल देखन आवा ❋ द्विज लखि सब रानिन बैठावा ॥२॥

जब राजा दिलीप हुये तब उन्होंने सब राक्षसोंको निकाल दिया ॥ १ ॥ यह बात सुन कर रावण बल देखने आया और ब्राह्मण जानकर सब रानियोंने बैठाया (राजा स्थानपर नहीं थे, ब्राह्मणोंकी रोक टोक नहीं थी, इस कारण निवासमें चला गया) ॥ २ ॥

पद पूजत निजरूप दिखावा ❋ भागीं रानि परम भय पावा ॥३॥
पुनि रावण सरजू तट आयो ❋ अर्चत तंदुल नृपति चलायो ॥४॥

जब रानी चरण पूजने लगीं तब रावणने अपना रूप दिखाया; जिसके देखते ही भयभीत होकर सब रानी घरोंमें भाग गयीं ॥ ३ ॥ फिर रावण सरयूके किनारे आया, राजाने पूजा करते-करते कुछ चावलके दाने फेंके ॥ ४ ॥

पूछेसि लोगन कहेउ बखानी ❋ सिंह गाय पकरी वन आनी ॥५॥
तेहिते शालि शीघ्र मैं प्रेरे ❋ शतशर सम लागे हरिकेरे ॥६॥

लोगोंने जब चावल फेंकनेका कारण पूछा तो कहा कि एक सिंहने वनमें गाय पकड़ी है ॥ ५ ॥ इस कारण मैंने यह चावल फेंके सो सौ तीरके समान लगे हैं ॥ ६ ॥

सुनि दशमुख मन अचरज आवा ❋ देखा जाय मृतक वन पावा ॥७॥
समुझि प्रताप गयो निज धामा ❋ नृपते चरित कह्यो नृपवामा ॥८॥

रावण यह सुनकर बड़े आश्चर्यमें हुआ और जाकर देखा तो वनमें मृतक सिंह पड़ा है ॥७॥ रावण वह प्रताप समझकर अपने घरको गया । जब राजा दिलीप महलोंमें आये तब रानियोंने सब चरित्र उनसे कह सुनाया ॥ ८ ॥

दोहा-रावण कृत सुनि अवधिपति, चंगुलभरि जल लीन्ह ॥
पवनमंत्र पढ़ि क्रोधयुत, दक्षिण दिशि तजि दीन्ह ॥ २१२ ॥

रावणका व्यवहार सुनकर महाराज दिलीपने अंजलिमें जल ग्रहण किया और पवनमन्त्र पढ़कर क्रोधित हो दक्षिण दिशामें छोड़ दिया ॥ २१२ ॥

दोहा-भयो विशिख दशलक्ष तब, कह नृप लंकहि जाहु ॥
सहित त्रिकूट समुद्रमें, बोरि फिरहु तेहि नाहु ॥ २१३ ॥

उस मन्त्रयुक्त जलसे दशलक्ष बाण हुए, तब राजाने कहा कि लंकामें तुम जाओ त्रिकूट पर्वतको उसके स्वामी सहित समुद्रमें डुबा दो ॥ २१३ ॥

चले सो विशिख पवनगति मोरी ❋ उलटन लगे नगर चहुँ ओरी ॥१॥
मयतनया दोउ कर तब जोरी ❋ कीन्ही विविध विनय नहिं थोरी ॥२॥

पवनकी गतिको तिरस्कार कर वे श्रेष्ठ बाण चले और चारों ओरसे नगरको उलटने लगे ॥ १ ॥ तब मन्दोदरी दोनों हाथ जोड़कर बहुत प्रकारसे विनती की ॥ २ ॥

दइ दुहाइ नृप बोली ऐसे ❋ यहँ नहिं नृपति लरत तुम कैसे ॥३॥
बाण चले दिलीप पहँ आये ❋ समुझि सोचि ते रहे चुपाये ॥४॥

राजा दिलीपकी दुहाई देकर बोली-यहां कोई राजा नहीं तुम कैसे और किससे लड़ते हो ॥ ३ ॥ बाण राजा दिलीपके पास फिर आये, तब राजा समझ सोचकर चुप हो रहे ॥ ४ ॥

इहि विधि बहुत गयो जब काला ❋ कोशलपुर रघु भयो नृपाला ॥५॥
मारुत बाण लंक गृह ढाये ❋ वनिता विनय वचन सुनि आये ॥६॥

इस प्रकार जब बहुत समय बीत गया तब राजा रघु अयोध्या के राजा हुये ॥ ५ ॥ जब रावणने कर मांगा तो पवनबाणसे लंकाके बहुत घर ढहाये और मन्दोदरीके विनय पूर्वक वचनसे बाण लौट आये ॥ ६ ॥

पुनि राजा अज भे बल भारी ❋ मच्यो युद्ध रावणसों भारी ॥७॥
अनिल शस्त्रते कटक समेता ❋ दीन्ह ताहि पहुँचाइ निकेता ॥८॥

फिर जब महाबलवान् अज राजा हुये तो इनसे और रावणसे बहुत युद्ध हुआ ॥ ७ ॥ पवन अस्त्रसे सेना सहित रावणको लंकामें पहुँचा दिया ॥ ८ ॥

तेजवान लखि रहा चुपाई ❋ तेहि पाछे भे दशरथ आई ॥९॥

इनको तेजस्वी देखकर रावण चुप रहा; फिर आकर दशरथजीने जन्म लिया ॥ ९ ॥